साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

ख्वाब: एक प्रेम कहानी

राकेश कुमार वर्मा

तेरे ख्वाबो की जंजीरे,
कही जो तोड़ में देता...
कहा चलते, कहा रुकते,
जो तुमको छोड़ मै देता १
मेरे नसीब का, चोला
भीगोके अश्क' में, बोला....
बड़ी ऊची दीवारे है,
तेरे आश्मानी किनारे है.....२

बड़े उलझन के पल है ये,
दिल-ऐ-सिहरन के पल है ये...
तुम आ के सामने बैठे,
हम धड़कन थाम के बैठे.....३

लवो पे बात आती है,
कहते ये जान जाती है....
हम तुमको देखते रहे,
खुद ही में सोचते रहे ४

कही ऐसा नजारा हो,
मुझमे तेरा किनारा हो....
तू जरा दोड के आये,
मेरी बाहों में थम जाए.....५

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

नशीली रात का पहरा,
हाथो में हो तेरा चहरा....
बरसती ये जवानी हो,
हम दोनों ही पानी हो.....६

किरण हर एक सुहानी हो,
जो तू इस दिल की रानी हो...
कट जाये धूप के फेरे,
जो शाम तेरी जुल्फ में ठहरे.....७

तडक के प्लेट जो टूटी,
खाव्बो की वादिया रूठी.....
पलट क तुम जो जाते हो,
बड़ा दिल को रुलाते हो.....८

बड़ी मुश्किल से संभाला है,
दिल को मार ही डाला है...
तेरे ख्वाबो के चिलमन से,
आज खुदको निकला है.....९

वाही अब ख्वाब सजोयेंगे,
जिनकी माला पिरोयेंगे...
चमक कम होगी उस मोती में,
मगर हम चैन से सोयेंगे...